

पाठ-8

उसकी माँ

विधा — कहानी (किसी घटना, पात्र या समस्या का क्रमबद्ध ब्यौरा जिसमें परिवेश, द्विधात्मकता, कथा का क्रमिक विकास और चरमोत्कर्ष का बिन्दु हो, उसे कहानी कहा जाता है)

कहानीकार — पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'

जीवन-परिचय — पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' का जन्म 1900 ई. में उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले के चुनार नामक ग्राम में हुआ। परिवार में अभावों के कारण व्यवस्थित शिक्षा पाने का अवसर नहीं मिला किन्तु अपनी नैसर्गिक प्रतिभा और साधना से अपने समय के चर्चित अग्रणी गद्य-शिल्पी के रूप में पहचान बनाई। उन्हें कवि मित्र निराला की तरह पुरातनपंथियों का कठोर विरोध सहना पड़ा। पत्रकारिता से निरन्तर सम्बन्ध रहा। उनकी मृत्यु 1967 ई. में हुई।

मुख्य रचनाएँ — कहानी संग्रह — 'पंजाब की महारानी', 'रेशमी पोली इमारत', 'कंचन सी काया', 'काल कोठरी', 'कला का पुरस्कार' आदि।

उपन्यास — 'चन्द हसीनों के खतूत', 'बुधुआ की बेटी', 'दिल्ली का दलाल', 'मनुष्यानंद'।

आत्मकथा — 'अपनी खबर'।

नाटक — 'महात्मा ईसा'

संपादन — 'आज', 'विश्वमित्र', 'स्वदेश', 'वीणा स्वराज्य', 'विक्रम'।

भाषा-शैलीगत विशेषताएँ — 1. भाषा सरल, सहज एवं भावपूर्ण

2. ओजपूर्ण, व्यंग्यपरक एवं उद्बोधनात्मक शैली।

3. अलंकृत और व्यावहारिक भाषा प्रयोग।

पाठ-परिचय — इस कहानी में देश की बुरी अवस्था से चिंतित युवा-पीढ़ी के विद्रोह को नए रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस अवस्था के लिए युवा पीढ़ी शासन तंत्र को दोषी मानती है और उसे उखाड़ फेंकना चाहती है। नई पीढ़ी विद्रोह के स्वर लिए राजसत्ता के विरोध में खड़ी है, वहीं पूर्ववर्ती बुद्धिजीवी समाज अपनी सुविधा के लिए राजसत्ता के तलवे चाटने को तैयार है। इन दोनों के बीच में है एक माँ, जो अनेकानेक प्रयासों के बावजूद व्यवस्था की चक्की से अपने बेटे को नहीं बचा सकी। इस कहानी में ममतामयी माँ का सजीव चित्रण हुआ है।

स्मरणीय बिन्दु

— यह कहानी स्वाधीनता—संग्राम से प्रेरित कहानी है। लेखक ने देश को आजाद कराने के लिए कुछ युवकों द्वारा दिए गए बलिदान का मर्मस्पर्शी चित्रण किया है। एक दिन दोपहर के समय लेखक कुछ पढ़ने के विचार से पुस्तकालय जाता है तभी शहर का पुलिस सुपरिटेण्डेंट उससे मिलने आता है। पुलिस सुपरिटेण्डेंट उसे लाल की फोटों दिखाकर, लाल के विषय में पूछताछ करता है लेखक बताता है कि वह उसके मैनेजर रामनाथ का पुत्र है और रामनाथ की मृत्यु हो चुकी है। लाल कॉलेज में पढ़ता है और अपनी बूढ़ी माँ के साथ दो मंजिले मकान में रहता है उनका खर्च लेखक के पास रखी उसके पिता की जमापूँजी से चलता है। पुलिस सुपरिटेण्डेंट लेखक को लाल से सावधान रहने को कहकर चला जाता है।

— लेखक लाल की माँ को बताता है कि वह लाल को समझा दे कि लाल क्रांतिकारियों से दूर रहे अन्यथा उसे दंड भोगना पड़ेगा। तभी लाल अपनी माँ को बुलाने आता है। तो लेखक उसे समझाने का प्रयास करता है। कि वह ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध षड्यंत्र करना छोड़ दे। लाल उसके साथ तर्क—वितर्क करता है वह कहता है कि वह देश को पराधीन नहीं देख सकता और देश को स्वतंत्र कराने के लिए कुछ भी कर सकता है। जो राष्ट्र किसी अन्य राष्ट्र के नागरिकों की स्वतंत्रता का दमन करता है, ऐसे दुष्ट राष्ट्र (ब्रिटिश सरकार) के सर्वनाश में वह अपना योगदान चाहता है।

— एक दिन लेखक घर आता है तो अपनी पत्नी को लाल की माँ से बात करते देखता है। वह लाल की माँ से लाल के मित्रों के विषय में पूछता है। वह बताती है कि लाल के सभी मित्र मस्त एवं हँसौड़ तथा जिंदादिल हैं। वे सभी उसे भारतमाता कहते हैं, और खूब बहस करते हैं। लेखक ने पूछा कि क्या वे लड़ने—झगड़ने, गोली, बंदूक की बातें करते हैं? तो वह सरलता से कहती हैं कि उनकी बातों का कोई मतलब थोड़े ही होता है।

— एक दिन चार—पाँच दिन बाहर रहने के बाद लेखक घर आता है तो लाल के घर में उसे सन्नाटा—सा दिखाई देता है। उसकी पत्नी उदास मुख से उसे बताती है कि लाल की माँ पर भयंकर विपत्ति आ गई है। पुलिस ने उसके घर की तलाशी में पिस्तौले, कारतूस और कुछ पत्र ढूँढ़ निकाले थे। उन पर हत्या, षड्यंत्र और सरकारी राज्य उलटने के आरोप लगाए गए और उन पर मुकदमा चलाया गया। सरकार के डर से कोई वकील उनकी पैरवी के लिए नहीं आया। मुकदमा लगभग एक वर्ष तक चला। लाल की माँ ने घर का सामान बेचकर एक—एक वकील को उनकी पैरवी के लिए तैयार किया। वह लाल और उसके साथियों को दोषी नहीं मानती थी। वह समझती थी कि यह पुलिस की चाल—बाजी है। वह उसे बचाने को निरन्तर दौड़—धूप करती रही। उसका शरीर अत्यंत कमजोर हो गया था किन्तु उसके सारे प्रयत्न व्यर्थ

हो गए। अदालत ने लाल, बंगड़ और उसके दो साथियों को फाँसी तथा अन्य दस लड़कों को सात वर्ष की कड़ी सजा सुनाई।

— जब से लाल और उसके साथी पकड़े गए थे, तब से शहर या मुहल्ले के सभी आदमी लाल की माँ से मिलने से डरते थे क्योंकि वह एक विद्रोही की माँ थी। एक दिन लेखक अपने पुस्तकालय में मेज़िनी की कोई पुस्तक देख रहा था, जिस पर लाल के हस्ताक्षर थे। वह पुलिस सुपरिंटेंडेंट की चेतावनी को याद कर उसे मिटाने ही वाला था कि लाल की माँ एक पत्र लेकर उसके पास आई वह लाल का पत्र पढ़कर सुनाता है। पत्र में लाल ने स्वयं और अपने साथियों के साथ मृत्यु के बाद माँ से मिलने की बात की थी। लाल की माँ पत्र लेकर चुपचाप चली जाती है, किन्तु लेखक बेचैन हो जाता है। वह सो नहीं पाता। उसे लगता है कि लाल की माँ कराह रही हैं वह लाल की माँ की खोज-खबर लेने के लिए नौकर को भेजता है। नौकर आकर बताता है कि वह हाथ में पत्र लिए घर के दरवाजे पर पौंव पसारे मृत पड़ी है।

व्याख्या अभ्यास —

“इस पराधीनता.....नहीं छोड़ सकता।”

प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश प्रसिद्ध कहानीकार पांडेय बेचन शर्मा ‘उग्र’ द्वारा रचित कहानी ‘उसकी माँ’ से उद्धृत है। इस कहानी में लेखक ने देश की बुरी स्थिति से चितित युवा पीढ़ी के विद्रोह को नए रूप में प्रस्तुत किया है।

यहाँ लेखक लाल को अपने क्रांतिकारी विचार त्यागने के लिए कहता है, प्रतिक्रिया स्वरूप लाल लेखक के सामने अपना पक्ष प्रस्तुत करते हुए कहता है।

व्याख्या— लाल कहता है कि गुलामी के बारे में आपकी और मेरी सोच में अन्तर है। आप और मैं दो भिन्न सिरों पर हैं। आप कट्टर राजभक्त हैं। मैं कट्टर राजद्रोही हूँ। राजभक्त होने के कारण आप अंग्रेजी शासन को ठीक मानते हैं, क्योंकि उससे आपको सुविधाएँ मिलती हैं। मैं राज-विद्रोही होने के कारण दूसरी बात को ठीक मानता हूँ। आप अपने लाभ, ऐश्वर्य के लिए अपना पद छोड़ नहीं सकते। मैं देश के विकास के लिए विदेशी शासन को नष्ट करना चाहता हूँ।

विशेष —

- 1) लेखक और लाल के माध्यम से जमींदारों और क्रांतिकारियों के वैचारिक मतभेद को दर्शाया है।
- 2) खड़ी बोली में सहज अभिव्यक्ति है।
- 3) भाषा सहज, सरल और भावपूर्ण है।

4) तर्कपूर्ण शैली

5) संवाद संक्षिप्त और सारग्राही है।

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर—

1. क्या लाल का व्यवहार सरकार के प्रति षड्यन्त्रकारी था?

उत्तर— लाल का विरोध सरकार से नहीं था। उसका विरोध उस व्यवस्था से था जो उसके देश को परतन्त्रता की जंजीर से जकड़े हुए थी। वह सरकार के प्रति षड्यन्त्र नहीं कर रहा था। उसका उद्देश्य भारतमाता को परतन्त्रता से मुक्ति दिलाना था। अतः कहा जा सकता है कि यद्यपि सरकार उसे षड्यन्त्रकारी मानती थी, वह षड्यन्त्रकारी न होकर क्रान्तिकारी था।

2. पूरी कहानी में जानकी न तो शासन तंत्र के समर्थन में हैं न विरोध में, किन्तु लेखक ने उसे केन्द्र में ही नहीं रखा, बल्कि कहानी का शीर्षक बना दिया क्यों?

उत्तर— जानकी शासन का समर्थन या विरोध समझने में असमर्थ है। वह एक ममतामयी माँ है। जिसका हृदय अपने पुत्र लाल के प्रति ममत्व से भरा है। जब लाल का चाचा जानकी को लाल के सरकार के प्रति विरोधी व्यवहार के बारे में बताता है तब जानकी उसे डाँटती है किन्तु जब वह गिरफ्तार हो जाता है तो वह शासन को कोसती है कि उसके बेटे को फँसाया गया है। लेखक ने जानकी के मातृत्व को महिमामंडित कर उसे मुख्य पात्र बना दिया है क्योंकि संपूर्ण घटनाचक्र में वही है जो सर्वाधिक प्रभावित होती है। अतः संपूर्ण कथा चक्र में ममतामयी माँ का चरित्र सभी पात्रों और घटनाओं की तुलना में सशक्त होकर उभरता है।

3. चाचा, जानकी और लाल के प्रति सहानुभूति तो रखता था, किन्तु वह डरता है, यह डर किस प्रकार का है?

उत्तर— चाचा जानकी और लाल के प्रति सहानुभूति तो रखता था परन्तु वह सरकार से डरता था। वह जमींदार था जमींदारी सरकार की कृपा पर टिकी थी। अगर वह लाल का साथ देता तो उसे चिन्ता थी कि कहीं वह सरकार का कोप-भाजन न बन जाय। प्रलोभन और डर मनुष्य को उसके कर्तव्य से विमुख कर देता है।

विचारणीय प्रश्न—

1. इस कहानी में दो तरह की मानसिकताओं का संघर्ष है, एक का प्रतिनिधित्व लाल करता है तथा दूसरे का उसका चाचा। आपकी नजर में कौन सही है? तर्कसंगत उत्तर दीजिए।
2. उन लड़कों तथा लाल ने कैसे सिद्ध किया कि जानकी सिर्फ माँ नहीं, भारतमाता है? कहानी के आधार पर जानकी का चरित्र—चित्रण कीजिए।
3. 'विद्रोही की माँ से सम्बन्ध रखकर कौन अपनी गरदन मुसीबत में डालता ? इस कथन के आधार पर उस शासन—तंत्र और समाज व्यवस्था पर प्रकाश डालिए।
4. 'ऐसे दुष्ट, व्यक्ति—नाशक राष्ट्र के सर्वनाश में मेरा भी हाथ हो के माध्यम से लाल क्या कहना चाहता है?
5. पुलिस द्वारा लाल के घर की तलाशी में क्या—क्या आपत्तिजनक सामग्री मिली?
6. पुलिस ने लाल पर क्या—2 आरोप लगाए।
7. कोई भी वकील लाल की पैरवी करने के लिए तैयार क्यों नहीं हुआ?
8. लाल ने अपनी माँ को पत्र में क्या लिखा?
9. इस कहानी की मूल संवेदना को स्पष्ट कीजिए?
10. अभ्यास हेतु गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या—
 - क) पुलिस वाले केवल संदेह.....धीरे—धीरे घुलाना—मिटाना है।
 - ख) चाचा जी, नष्ट हो जाना.....भुजाओं की सखियाँ हैं।
 - ग) लोग ज्ञान न पा सकें.....यह शासन—प्रणाली।
 - घ) तू भी जल्दी वहीं.....वहाँ बड़ा आनन्द है।